वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

औषधीय और सुगंधित पौधों के संरक्षण, खेती, कटाई और विपनण में किसानों की भूमिका पर प्रशिक्षण

(Role of Farmers in Conservation, Cultivation, Harvesting, and Marketing of Medicinal and Aromatic Plants)

दिनांक – 14.02.2022

वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी के मार्गदर्शन में पर्यावरण अनुसंधान केंद्र, सुकना द्वारा दिनांक 14.02.2022 को "औषधीय एवं असगंध पौधो का संरक्षण, खेती, विदोहन एवं बाजारीकरण पर किसानों की भूमिका विषय पर एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमे निम्न विषयों पर व्याख्यान दिया गया।

1. सामुदायिक संगठन।

2. विभिन्न वानिकी उत्पाद का स्थायी निष्कर्षण।

3. समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन सुनिश्चित करना।

4. औषधीय एवं असगंध पौधों की खेती एवं संग्रहण।

श्री प्रमोद चंद लकड़ा, भा.व.से., प्रभारी, पर्यावरण अनुसंधान केंद्र, सुकना ने औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती के महत्व पर प्रकाश डालते हुए खाली जमीन पर ऐसे औषधीय और सुगंधित पौधे लगाने की सलाह दी गयी, जो जंगली जानवरों को अकर्षित नहीं करते साथ हीं साथ यह काफी लाभदायक हो। उन्होने आगे कहा कि गांव के विकास के लिए यह केंद्र हमेशा सहयोग के लिए तत्पर है।

श्री सरोज विश्वकर्मा ने औषधीय पौधों की खेती के विभिन्न पहलू पर व्याख्यान दिया एवं स्थानीय क्षेत्रों में उपलब्ध विभिन्न औषधीय प्रजाति को बताया तथा उसके लिए उपलब्ध बाजार भी बताया।

अरुणाचल बसु, सेवानिवृत, वन प्रमंडल पदाधिकारी (पश्चिम बंगाल) ने इस क्षेत्र में किए गए कार्यों को साझा किया। सुपाड़ी के साथ गिलोय की खेती का उदाहरण दिया एवं उच्च मूल्य प्राप्ति के लिए औषधीय पौध का विदोहन एवं भंडारण तकनीक को समझाया।

डॉ. वसीम रजा सहायक प्रोफेसर, प्रभारी, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, खेड़ाबाड़ी, उत्तर बंग कृषि विश्वविद्यालय, पुंडीबारी, पश्चिम बंगाल ने औषधीय पौधों का प्रसंस्करण एवं बाजार को बताते हुए चम्पासारी में इनके बाजार की चर्चा की। धृतकुमारी का एक बहुत बड़ा बाजार सिलीगुड़ी में उपलब्ध होने की जानकारी दी गयी ।

इस कार्यक्रम में 46 किसानों ने भाग लिया एवं उनकी उत्सुकता ने इस कार्यक्रम को अधिक प्रभावी बनाया। किसानों ने औषधीय पौधों की भी मांग की जिसे अपनी छोटे-छोटे क्षेत्रों में लगाकर अपने जीविकोपार्जन को बढ़ा सके। जंगली जानवर एवं मानव के टकराव एवं इसके लिए उपयुक्त औषधीय पौध की खेती के लिए भी सुझाव दिया गया।